I. उत्पादन

जीडीपी वृद्धि अपने पूर्ववर्ती उच्च वृद्धि पथ पर लौट रही है जिसमें व्यापक आधार की वृद्धि गति प्रमुख है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि और कृषि उत्पादन में वृद्धि ने वृद्धि प्रक्रिया को मजबूत होने में सहायता की। औद्योगिक वृद्धि मजबूत थी, हालांकि उसमें काफी अस्थिरता थी। सेवा क्षेत्र और कृषि दोनों का निष्पादन अच्छा रहने से, वृद्धि की स्थिरता के लिए औद्योगिक क्षेत्र में निरंतर उछाल आवश्यक है। मजबूत वृद्धि के साथ क्षेत्रीय असंतुलन भी बढ़े हैं विशेष रूप से कुछ मदों में जहां मांग क्षमता से अधिक गति से बढ़ रही है जिससे मुद्रास्फीति पर दबाव आ रहा है। उच्च वृद्धि और कम मुद्रास्फीति की स्थिति के लिए, असंतुलनों की मात्रा सीमित रखने के ढांचागत नीति के उपाय महत्वपूर्ण होंगे।

अधोमुखी जोखिम कम होने से अर्थव्यवस्था उच्च वृद्धि पथ पर लौट आई

I.1 2010-11 की पहली छमाही में 8.9 प्रतिशत वृद्धि के साथ भारत विश्व में सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना रहा। 2010-11 की ति1 में देखी गई मजबूत वृद्धि के टिकाऊपन संबंधी अनिश्चितता ति2 में वृद्धि गति बनी रहने से काफी कम हो गई। कम आधार के प्रभाव के बावजूद, पहली छमाही की जीडीपी वृद्धि उच्च वृद्धि पथ पर लौट आने का अनुमान है (सारणी I.1)। ति2 की मजबूत वृद्धि की गति सेवा क्षेत्र में लगातार उछाल और सामान्य दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण कृषि निष्पादन में और तेजी दर्शाती है। औद्योगिक वृद्धि आधार प्रभाव के कारण कम होने के बावजूद उच्च दिशा में रही किंतु उसमें अस्थिरता थी।

रबी की संभावना के अनुसार कृषि क्षेत्र में वृद्धि की गति में निरंतरता होगी

I.2 दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान सामान्य वर्षा और उत्तर-पूर्व मानसून की संतोषजनक प्रगति (31 दिसंबर 2010 को दीर्घावधि औसत का 121 प्रतिशत) से 2010-11 के दौरान कृषि निष्पादन की संभावना सुधर गई। जहां खरीफ 2010-11 के दौरान बुवाई किया गया क्षेत्र पिछले वर्ष की तुलना में 7 प्रतिशत अधिक था, वहीं मुख्य रबी फसलों नामत:, गेहूं और दलहन, संबंधी अब तक (14 जनवरी 2011) बुवाई किया गया क्षेत्र पिछले वर्ष की इसी अवधि के क्षेत्र की तुलना में और इन फसलों संबंधी सामान्य बुवाई क्षेत्र से आगे निकल गया (सारणी I.2)। संतोषजनक मानसून के कारण बुवाई की स्थिति में सुधार और जलाशय की स्थिति में सुधार से रबी फसल अच्छी रहने की आशा है।

I.3 खरीफ उत्पादन के प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार, 2010-11 के दौरान कुल खरीफ खाद्यान्न उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में

सारणी I.1: क्षेत्रीय जीडीपी की वृद्धि (आधार: 2004-05)

(प्रतिशत)

मद	2008-09*	2009-10#	2009-10				2010-11		2009-10	2010-11
			ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	एच1	एच1
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	**1.6**	**0.2**	**1.9**	**0.9**	**-1.8**	**0.7**	**2.5**	**4.4**	**1.0**	**3.8**
2. उद्योग	**3.1**	**10.4**	**4.6**	**8.5**	**12.3**	**15.1**	**11.7**	**9.0**	**6.5**	**10.3**
2.1 खनन एवं उत्खनन	1.6	10.6	8.2	10.1	9.6	14.0	8.4	8.0	9.1	8.2
2.2 विनिर्माण	3.2	10.8	3.8	8.4	13.8	16.3	13.0	9.8	6.1	11.3
2.3 बिजली, गैस और जलापूर्ति	3.9	6.5	6.4	7.7	4.7	7.1	6.2	3.4	7.1	4.8
3. सेवाएँ	**9.3**	**8.3**	**8.0**	**10.2**	**7.3**	**8.5**	**9.4**	**9.7**	**9.1**	**9.6**
3.1 निर्माण	5.9	6.5	8.4	8.3	8.1	8.7	10.3	8.8	8.4	9.6
3.2 व्यापार, होटल, रेस्तराँ, परिवहन और संचार इत्यादि	7.6	9.3	5.6	8.2	10.2	12.4	10.9	12.1	6.9	11.5
3.3 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएँ	10.1	9.7	11.7	11.3	7.9	7.9	7.9	8.3	11.5	8.1
3.4 सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएँ	13.9	5.6	7.6	14.0	0.8	1.6	7.9	7.3	11.0	7.6
4. कारक लागत पर जीडीपी	**6.7**	**7.4**	**6.3**	**8.7**	**6.5**	**8.6**	**8.9**	**8.9**	**7.5**	**8.9**

* त्वरित अनुमान। # संशोधित अनुमान।
स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकीय कार्यालय।

सारणी I.2: रबी फसल के तहत के बुवाई क्षेत्र

(मिलियन हेक्टेयर)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई *		
		2008-09	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5
गेहूं	27.33	27.41	27.91 (1.9)	28.84 (3.3)
चावल	4.25	1.02	1.27 (23.9)	0.92 (-27.3)
कुल मोटे अनाज	6.32	6.74	6.36 (-5.7)	5.88 (-7.4)
कुल अनाज	37.91	35.17	35.54 (1.0)	35.65 (0.3)
कुल दालें	12.02	13.46	13.69 (1.8)	14.53 (6.1)
कुल खाद्यान्न	49.93	48.62	49.23 (1.2)	50.18 (1.9)
कुल तिलहन	9.98	9.10	8.73 (-4.1)	8.94 (2.4)
सभी फसले	59.91	57.73	57.96 (0.4)	59.12 (2.0)

* 14 जनवरी को स्थिति
टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत घट-बढ़ दर्शाते हैं।
स्रोत: कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

10.4 प्रतिशत अधिक रहने का अनुमान है। रबी फसल के संबंध में, वर्षा, अधिक बुवाई और जलाशय की स्थिति में सुधार के अनुसार गेहूं, रबी दलहन (2009-10 में कुल दलहन उत्पादन में इनका हिस्सा लगभग 70 प्रतिशत था) और तिलहन का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में अधिक रहने का अनुमान है। किंतु, बहुत कम आधार पर वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि खाद्यान्न की प्रति व्यक्ति आय में गत्यावरोध को ढक देती है। परिणामस्वरूप, कृषि क्षेत्र में मजबूत वृद्धि और सामान्य मानसून से खाद्य मुद्रास्फीति पर दबाव को कम नहीं हुआ।

कुछ क्षेत्रों में मांग-आपूर्ति अंतर बढ़ने से खाद्य मुद्रास्फीति पर लगातार दबाव आ रहा है

I.4 कृषि क्षेत्र में मजबूत वृद्धि की संभावना के बावजूद, अनेक कृषि पण्यों के मूल्य लगातार अधोमुखी बने रहे जो ढांचागत असंतुलनों को दर्शाते हैं। ग्यारहवीं योजना के दस्तावेज के अनुसार 2009-10 में मांग-आपूर्ति अंतर तिलहन में 13.4 प्रतिशत, दलहन में 18.7 प्रतिशत और खाद्यान्न में लगभग 2.0 प्रतिशत था[1]।

I.5 1990-2010 के दौरान 1.6 प्रतिशत पर खाद्यान्न उत्पादन की औसत वृद्धि दर 1.9 प्रतिशत की औसत जनसंख्या वृद्धि से कम थी। मजबूत वृद्धि के साथ, प्रति व्यक्ति व्यय योग्य आय में वृद्धि की गति आपूर्ति वृद्धि की गति से बहुत अधिक थी। खाद्यान्न की प्रति व्यक्ति प्रति दिन की उपलब्धता 1991 के 510 ग्राम से कम होकर 2008 में 436 ग्राम हो गई। प्रमुख कृषि फसलों की आपूर्ति मांग से कम रही जिसका कारण उपज में वृद्धि की कम दर, अपर्याप्त सिंचाई कवरेज और मानसून पर अत्यधिक निर्भरता था।

जहां कम प्रतिलाभ और निविष्टियों की बढ़ी हुई लागत से दुग्ध उत्पादों के मूल्य बढ़ गए, वहीं असमय की और अव्यवस्थित वर्षा ने बाजार में प्याज और सब्जियों की आवक को प्रभावित किया

I.6 बढ़ती जनसंख्या और आय के स्तर में वृद्धि ने खानपान में बदलाव लाया जिससे विभिन्न कृषि उत्पादों, विशेष रूप से दलहन और साग और साथ ही मांस, अंडे, दूध और मछली जैसे प्रोटीनयुक्त उत्पादों की मांग में काफी वृद्धि हुई। मांग के स्वरूप में ढांचागत परिवर्तन के प्रति उत्पादन के अपर्याप्त प्रतिसाद से इन उत्पादों के मांग-आपूर्ति बेमेल को लगातार बढ़ाया है। दूध के मामले में, आपूर्ति पक्षीय बाधाओं ने मूल्यों पर दबाव बनाया। इसके अलावा, चारा, श्रम और ईंधन जैसी मदों के निविष्टि मूल्यों में वृद्धि ने मूल्यों पर और दबाव बनाया। अंडे और चिकन जैसे कुक्कुट उत्पादों के मामले में, कुक्कुट-खाद्य मूल्यों में वृद्धि से मूल्यों में वृद्धि हुई। देश के अनेक भागों में अत्यधिक वर्षा के कारण प्याज, आलू और टमाटर जैसी फसलें और अनेक प्रकार के फल बर्बाद हुए। प्याज की फसल आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में अक्तूबर 2010 में हुई चक्रवादी वर्षा से प्रभावित हुई और महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान में नवंबर 2010 की असमय और अव्यवस्थित रूप से हुई वर्षा से प्याज की फसल बर्बाद हुई। प्याज की आपूर्ति में कमी का एक और मुख्य कारण फसलों में कीड़ा लगना भी था।

व्यापक खाद्य स्टॉक खाद्य सुरक्षा मुहैया कराता है किंतु खाद्य मुद्रास्फीति पर दबाव कम नहीं करता जिसका आंशिक कारण खाद्य मुद्रास्फीति के प्रेरक मदों का स्वरूप है जो कि खाद्य सुरक्षा की परिधि से बाहर होते हैं

I.7 सरकारी खरीद करने वाली संस्थाओं के पास का खाद्य स्टॉक हालांकि हाल के महीनों में कम हो रहा है, फिर भी यह संबंधित बफर स्टॉक के मानदंडों और खाद्य सुरक्षा आरक्षण की अपेक्षा से काफी

1 फसल हस्बेंडरी, कृषि इनपुट्स, मांग और आपूर्ति अनुमान और कृषि सांख्यिकी पर ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) के लिए कार्य दल की रिपोर्ट। आपूर्ति चौथे अग्रिम अनुमान पर आधारित वास्तविक देशी उत्पादन से जबकि मांग तिलहन के मामले में आदर्शक दृष्टिकोण से और दलहन तथा खाद्यान्न के मामले में अनुमान व्यवहारात्मक दृष्टिकोण से संबंधित है।

चार्ट I.1: खाद्य स्टॉक और इसके निर्धारक तत्व

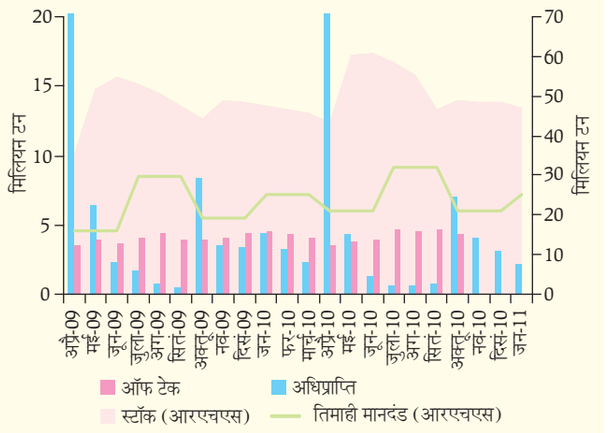

टिप्पणी: 1. ऑफ टेक के लिए आंकड़े केवल अक्तूबर 2010 तक उपलब्ध हैं।
2. अधिप्राप्ति और ऑफ टेक आंकड़े मासिक आंकड़े हैं।

अधिक बना हुआ है। खाद्यान्न, नामत: चावल और गेहूं की कम मासिक औसत सरकारी खरीद (14 जनवरी 2011 तक) के साथ ही अधिक मासिक औसत उठाव (अक्तूबर 2010 तक) से हाल के महीनों में खाद्य स्टॉक में कमी आई। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) और अन्य सरकारी संस्थाओं के पास का कुल खाद्यान्न स्टॉक जो कि 1 जून 2010 को 60.9 मिलियन टन था, वह 1 जनवरी 2011 को कम होकर 47.3 मिलियन टन रह गया (चार्ट I.1)। खाद्यान्न प्रबंधन पर नीति में में मांग के संबंध में बेहतर आपूर्ति प्रबंधन पर फोकस करना होगा और साथ ही खाद्यान्न मदों की ढांचागत क्षमता बाधाओं को दूर करना होगा।

औद्योगिक वृद्धि मजबूत किंतु अस्थिर रही है

I.8 औद्योगिक क्षेत्र ने अप्रैल-नवंबर 2010 के दौरान 9.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जो कि मुख्यत: विनिर्माण और खनन क्षेत्र के निष्पादन से प्रेरित थी (सारणी I.3)। किंतु, वृद्धि का स्वरूप चालू वर्ष के महीनों में अस्थिर रही है (चार्ट I.2)।

I.9 बिजली उत्पादन की वृद्धि कम बनी रही। विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि पूंजीगत माल और उपभोक्ता टिकाऊ माल के उत्पादन से प्रेरित थी। उपभोक्ता गैर-टिकाऊ माल लगातार धीमा बना रहा प्राथमिक रूप से जिसका कारण गेहूं का आटा/मैदा, चावल की भूसी का तेल, कॉफी, बालों का तेल, एचएसएल लैंप, सुगंधी ट्यूब और रबर के पादत्राण जैसे उद्योगों की वृद्धि में गिरावट था।

विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि का आधार अब तक व्यापक नहीं हुआ है

I.10 अप्रैल-नवंबर 2010 के दौरान, सत्रह में से नौ उद्योगों (आइआइपी में 36 प्रतिशत भारांक का योगदान देने वाले) द्वारा पिछले वर्ष की तुलना में अधिक वृद्धि दर्शाने के बावजूद, विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि का आधार अब तक व्यापक नहीं हुआ है। इस अवधि की समग्र वृद्धि के लगभग 73 प्रतिशत का योगदान शीर्ष के पांच विनिर्माण उद्योगों का था और इनका संयुक्त भारांक 24.6 प्रतिशत था (चार्ट I.3)।

सारणी I.3: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक : उद्योगों का क्षेत्रवार और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर			भारांकित अंशदान#		
		अप्रैल-मार्च	अप्रैल-नवंबर		अप्रैल-मार्च	अप्रैल-नवंबर	
		2009-10	2009-10	2010-11 अ	2009-10	2009-10	2010-11 अ
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्रवार							
खनन	10.5	9.9	8.4	8.0	6.0	7.2	5.4
विनिर्माण	79.4	11.0	7.5	10.0	89.4	86.5	90.8
बिजली	10.2	6.0	5.7	4.5	4.6	6.3	3.9
उद्योग-आधारित							
मूल वस्तुएं	35.6	7.2	5.8	5.8	19.5	22.6	17.5
पूंजीगत वस्तुएं	9.3	20.9	6.6	22.5	29.4	12.8	33.7
मध्यवर्ती वस्तुएं	26.5	13.6	11.2	9.6	32.4	39.0	26.9
उपभोक्ता वस्तुएं (क+ख)	28.7	6.2	6.1	6.8	18.7	25.5	21.9
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	5.4	24.6	20.6	21.7	17.9	21.8	20.2
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	23.3	0.4	1.2	0.7	0.9	3.7	1.7
सामान्य	**100.0**	**10.5**	**7.4**	**9.5**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

: पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि आंकड़ो का योग 100 न हो। अ : अनंतिम।
स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

चार्ट I.2: औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में वृद्धि (वर्ष - दर - वर्ष)

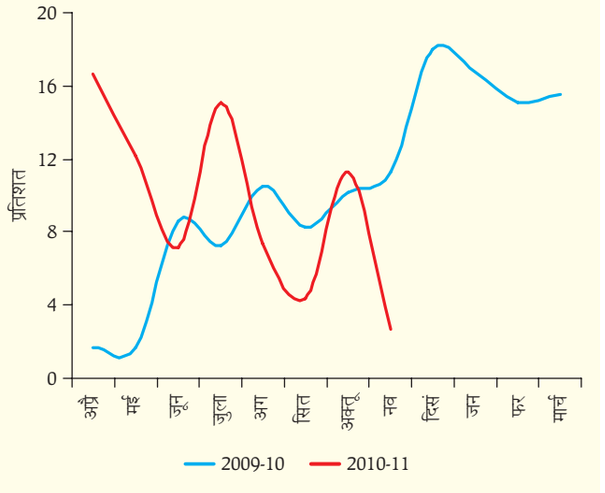

सारणी I.4: अवसंरचना क्षेत्र में क्षमता उपयोग

(प्रतिशत)

क्षेत्र	अप्रैल-अक्टूबर	
	2009-10	2010-11
1	2	3
तैयार इस्पात (सेल+वीएसपी+टाटा स्टील)	87.7	88.9
सीमेंट	80.0	75.0
उर्वरक	94.1	94.2
रिफाइनरी उत्पादन-पेट्रोलियम	101.3	102.7
ताप विद्युत*	72.9	76.2

*: आकड़े प्लान्ट लोड कारक दर्शाते हैं और इनका संबंध अप्रैल-दिसंबर से है।

स्रोत: अवसंरचना क्षेत्र के कार्य निष्पादन पर कैप्सूल रिपोर्ट (अप्रैल 2010-अक्टूबर 2010),सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय,भारत सरकार और केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण।

कोर क्षेत्र में क्षमता उपयोग सामान्यत: अपरिवर्तित है किंतु मजबूत वृद्धि के साथ क्षमता दबावों की जोखिम होती है

I.11 अप्रैल-अक्तूबर 2010 के दौरान, बुनियादी सुविधा क्षेत्र में क्षमता उपयोग का स्तर पिछले वर्ष की तुलना में अधकि नहीं बढ़ा (सारणी I.4)। सीमेंट क्षेत्र में कम क्षमता उपयोग आंशिक रूप से मांग की तुलना में व्यापक क्षमता वृद्धि दर्शाता है।

I.12 रिज़र्व बैंक का आदेश बही, मालसूची और क्षमता उपयोग (ओबीआइसीयूएस) सर्वेक्षण दर्शाता है कि 2010-11 की ति2 में क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई किंतु यह पिछले शीर्ष स्तर से कम ही रहा (चार्ट I.4)।

I.13 2010-11 की दूसरी तिमाही के दौरान, रोजगार वृद्धि की स्थिति में पिछली तिमाही और पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में सुधार हुआ (सारणी I.5)।

कोर बुनियादी सुविधा क्षेत्र की वृद्धि जीडीपी और औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि से पीछे है

I.14 छह कोर उद्योगों (आइआइपी में कुल 26.6 प्रतिशत भारांक) ने अप्रैल-नवंबर 2010 के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में 5 प्रतिशत की कम वृद्धि दर्ज की (चार्ट I.5)। बिजली उत्पादन ने कम वृद्धि दर्ज की जिसका प्राथमिक कारण खनीज ईंधन, विशेष रूप से कोयला, के प्रत्येक प्रकार में नकारात्मक या बहुत कम वृद्धि से आई बाधाओं से ताप विद्युत उत्पादन का निष्पादन ठीक रहना था। कोयला उत्पादन, जो कि चालू वित्तीय वर्ष के दौरान कम था, वातावरण संबंधी मानदंडों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ने से लगातार कम रह सकता है।

चार्ट I.3: विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि संकेंद्रण

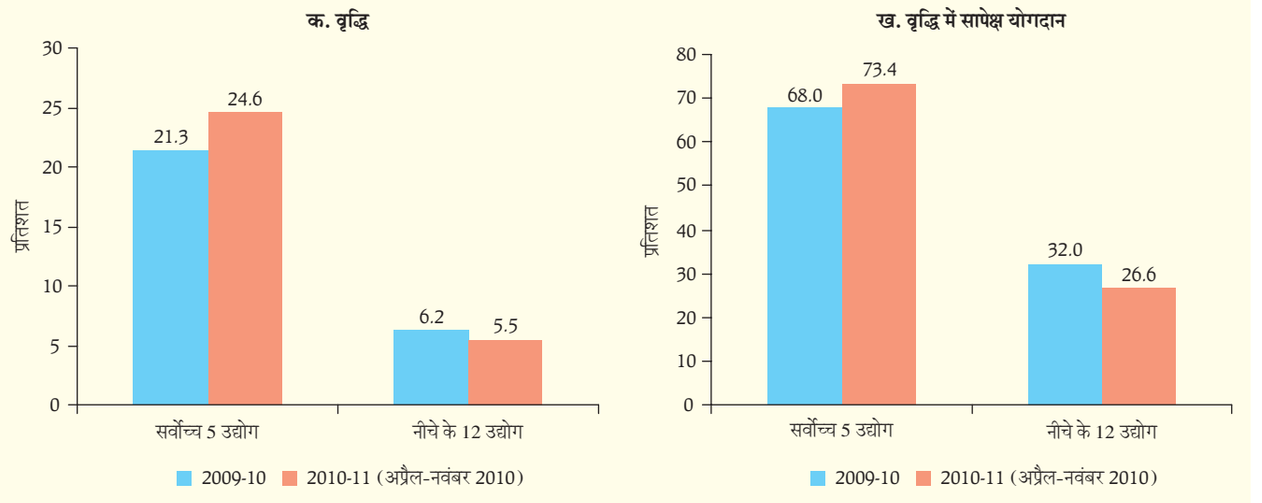

चार्ट I.4: क्षमता उपयोग

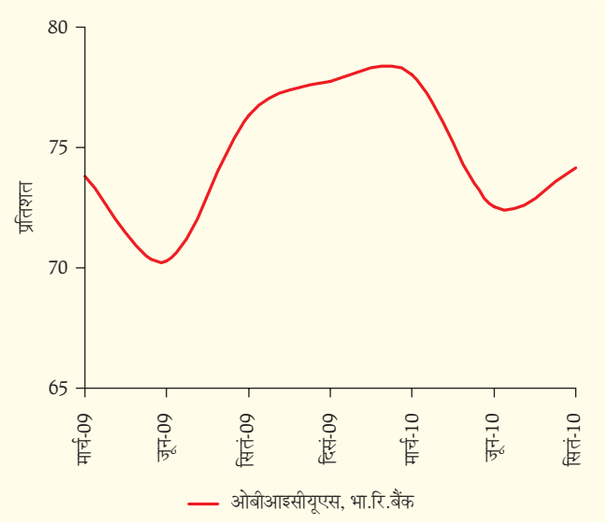

सारणी I.6: सेवा क्षेत्र गतिविधियों के संकेतक

(वृद्धि प्रतिशत में)

सेवा क्षेत्र के संकेतक	2008-09	2009-10	अप्रैल-अक्टू 2009-10	अप्रैल-अक्टू 2010-11
1	2	3	4	5
यात्रियों का आगमन	-3.3	3.5	0.2	8.5
वाणिज्यिक वाहन				
उत्पादन	-24	35.9	15.1	41.3
सीमेंट *	7.2	10.5	11	4.1
स्टील *	1.6	4.9	2.9	6.9
रेलवे राजस्व आय				
माल यातायात	4.9	6.6	8.8	7.7
सेल फोन कनेक्शन	80.9	47.3	49.5	26.6
प्रमुख बंदरगाहों पर हैंडल किया गया पोतभार	2.2	5.7	3.6	1.7
नागरिक उड्डयन				
हैंडल किया गया निर्यात पोतभार	3.4	10.4	5.2	20.5
हैंडल किया गया आयात पोत भार	-5.7	7.9	-6.9	27.4
अंतरराष्ट्रीय टर्मिनलों पर हैंडल किए गए यात्री	3.8	5.7	2.7	12.7
घरेलू टर्मिनलों पर हैंडल किए गए यात्री	-12.1	14.5	8.7	14.8

$: आंकड़ों का संबंध अप्रैल-दिसंबर से है।
* : आंकड़ों का संबंध अप्रैल-नवंबर से है।
स्रोत: पर्यटन मंत्रालय;सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय और एसअइएएम।

सेवा क्षेत्र, जिसका जीडीपी में प्रमुख हिस्सा है, में लगातार तेजी रही

I.15 "व्यापार, होटल, रेस्तरा, परिवहन, स्टोरेज और संचार" और "वित्तीयन, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएं" की अगुवाई में सेवा क्षेत्र की वृद्धि ने 2010-11 की ति2 के दौरान पिछली तीन तिमाहियों की तुलना में क्रमिक वृद्धि दर्शाई। वर्ष के दौरान अब तक वाणिज्यिक वाहन उत्पादन, सेल फोन कनेक्शन, देशी औ अंतरराष्ट्रीय टर्मिनलों पर हैंडल किया गया एयर कार्गो और यात्रियों सहित विभिन्न प्रमुख संकेतकों की मजबूत वृद्धि हाल की वृद्धि के स्वरूप की निरंतरता दर्शाती है (सारणी I.6)। वृद्धि की गति बनी रहने के लिए ढांचागत असंतुलनों से होने वाली मुद्रास्फीति की जोखिम पर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान देने की आवश्यकता है

I.16 खरीफ उत्पादन में अब तक सुधार, उत्तर-पूर्व मानसून में संतोषजनक प्रगति के कारण रबी उत्पादन की अच्छी संभावना और इसके कारण 2010-11 में रबी फसल के क्षेत्र के कवरेज में वृद्धि से कृषि क्षेत्र की वृद्धि की गति बनी रहने की संभावना है। अस्थायी और ढांचागत आघातों के कारण कृषि उत्पादों की आपूर्ति में गंभीर समस्याओं के कारण बाधाओं को हटाने, पैदावार के बाद की हानियां कम करने, लेनदेन लागत कम करने, शीत गृहों और भंडारन गृहों में सुधार और समन्वयित आपूर्ति श्रृंखला को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि गति बनी रहने की संभावना है जैसा कि इसके विभिन्न प्रमुख संकेतकों से पता चलता है। किंतु, आधार प्रभाव के कारण औद्योगिक उत्पादन में कमी आने की संभावना

सारणी I.5: अनुमानित रोजगार में परिवर्तन

(000 में)

उद्योग /समूह	दिस. 2009 की तुलना में मार्च 2010	मार्च 2010 की तुलना में जून 2010	जून 2010 की तुलना में सित. 2010	सित. 2009 की तुलना में सित. 2010
1	2	3	4	5
1. परिधानों सहित कपड़े	-119	-63	245	79
2. चमड़ा	0	21	4	34
3. धातु	4	45	27	99
4. आटोमोबाइल	29	51	29	115
5. रत्न और आभूषण	24	4	4	39
6. यातायात	-2	-21	13	-12
7. आईटी/बीपीओ	129	129	108	936
8. हैंडलूम/पावरलूम	-5	-3	6	7
समग्र	**61**	**162**	**435**	**1296**

स्रोत: आठ तिमाही त्वरित रोजगार सर्वेक्षण,जुलाई-सितंबर,2010:श्रम और रोजगार मंत्रालय,श्रम ब्यूरो,भारत सरकार।

चार्ट I.5: अवसंरचना उद्योगों की वृद्धि

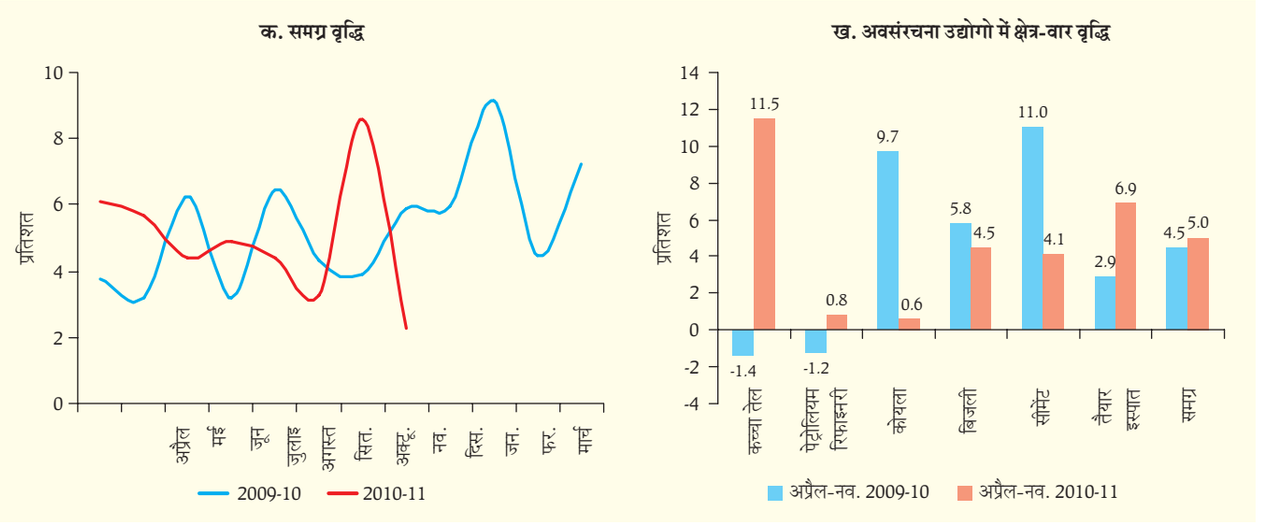

है। नवंबर 2010 में कोर बुनियादी सुविधाओं में कमी आना और दिसंबर 2010 में विनिर्माण पीएमआइ में मंदी निकट संदर्भ में आइआइपी वृद्धि के संबंध में अनिश्चितता दर्शाती है। वैश्विक अनिश्चितता और तेल तथा पण्य मूल्यों में वृद्धि से वृद्धि के प्रति अधोमुखी जोखिम बनी हुई है हालांकि इन जोखिमों से वृद्धि में किसी बड़ी बाधा की संभावना नहीं दिखती।